

रविवार 5 फ़रवरी, 2023

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 26: 19

"मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।"

उत्तरदायी अध्ययन: प्रकाशित वाक्य 4: 1, 2
प्रकाशित वाक्य 21: 1, 3-5, 7

- 1 देखो, कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है।
- 2 और तुरन्त मैं आत्मा में आ गया।
- 1 फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।
- 3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।
- 4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।
- 5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।
- 7 जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 1: 1, 3, 4, 9 (यह), 12 (जैसा), 13

- 1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।
- 4 उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।
- 9 ... सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।
- 12 ... जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
- 13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

2. यूहन्ना 3: 1-3, 5 (मैं)-7, 34

- 1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
- 2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरु हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
- 3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
- 5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
- 6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
- 7 अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
- 34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।

3. यूहन्ना 6: 16-20, 28, 29, 63, 64 (से 1st .), 66-69

- 16 फिर जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए।
- 17 और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे: उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उन के पास नहीं आया था।
- 18 और आन्धी के कारण झील में लहरे उठने लगीं।
- 19 सो जब वे खेते खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए।
- 20 परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हूं; डरो मत।
- 28 उन्होंने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?
- 29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।

- 63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।
- 64 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।
- 66 इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।
- 67 तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?
- 68 शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।
- 69 और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।

4. यूहन्ना 11: 1, 4, 17, 21, 23-26, 32-35, 38-44

- 1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
- 4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
- 17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
- 21 मारथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।
- 23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।
- 24 मारथा ने उस से कहा, मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।
- 25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
- 26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
- 32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता।
- 33 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ।
- 34 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है?
- 35 यीशु के आंसू बहने लगे।
- 38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
- 39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।

- 40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
- 41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।
- 42 और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
- 43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
- 44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

5. रोमियो 8: 1, 14, 31

- 1 सोअब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- 14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
- 31 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

6. प्रकाशित वाक्य 12: 10, 12 (से 1st .), 17 (पकड़ना)

- 10 फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के साम्हने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया।
- 12 इस कारण, हे स्वर्गों, और उन में के रहने वालों मगन हो॥
- 17 ... परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।

7. लूका 17: 21 (क्योंकि)

- 21 ...क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 73 : 7 (आत्मा है)

आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी समानता है।

2. 90 : 24-8

स्वयं के लिए प्रवेश यह है कि मनुष्य ईश्वर की अपनी समानता है जो मनुष्य को अनंत विचार के लिए स्वतंत्र करता है। यह विश्वास मृत्यु पर दरवाजा बंद कर देता है, और इसे अमरता की ओर विस्तृत करता है। आत्मा की समझ और मान्यता अंत में आनी चाहिए, और हम दिव्य सिद्धांत की आशंका के माध्यम से होने के रहस्यों को सुलझाने में हमारे समय में सुधार कर सकते हैं। वर्तमान में हम जानते हैं कि मनुष्य क्या नहीं है, लेकिन हम निश्चित रूप से यह जानते हैं जब मनुष्य भगवान को दर्शाता है।

प्रकाशितवाक हमें "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" के बारे में बताता है। क्या आपने कभी इस स्वर्ग और पृथ्वी का चित्र बनाया है, जो परम ज्ञान के नियंत्रण में प्राणियों द्वारा बसा हुआ है?

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

3. 369 : 5-22

जिस अनुपात में मनुष्य को सभी वस्तुएं मनुष्य के रूप में खो देती हैं, उसी अनुपात में मनुष्य इसका स्वामी बन जाता है। वह तथ्यों की एक दिव्य भावना में प्रवेश करता है, और यीशु के धर्मशास्त्र को समझने के रूप में बीमारों को ठीक करने, मृतकों को ऊपर उठाने और लहर पर चलने के रूप में प्रदर्शित करता है। इन सभी कर्मों से यीशु का विश्वास इस बात पर है कि सामग्री भौतिक है, यह विश्वास है कि यह जीवन का मध्यस्थ या अस्तित्व के किसी भी रूप का निर्माणकर्ता हो सकता है।

हमने यह कभी नहीं पढ़ा कि लूका या पॉल ने रोग को ठीक करने के लिए किसी उपाय की खोज करने के लिए उसे वास्तविकता बनाया। यीशु ने कभी नहीं पूछा कि क्या बीमारी तीव्र या पुरानी है, और उसने कभी भी स्वास्थ्य के नियमों पर ध्यान देने की सिफारिश नहीं की, कभी दवा नहीं दी, कभी यह जानने के लिए प्रार्थना नहीं की कि क्या ईश्वर की इच्छा है कि मनुष्य जीवित रहे। उसने मनुष्य को, जिसका जीवन ईश्वर है, अमर होना समझा, और जाना कि मनुष्य के दो जीवन नहीं हैं, एक को नष्ट करने के लिए और दूसरे को अविनाशी बनाने के लिए।

4. 75 : 13-16

यीशु ने लाजर को इस समझ के साथ बहाल किया कि लाजर की मृत्यु कभी नहीं हुई थी, न कि इस बात से कि उसका शरीर मर गया था और फिर दोबारा जीवित हो गया था।

5. 67 : 32-6

वह युग आ रहा है जब अस्तित्व के सत्य की समझ सच्चे धर्म का आधार होगी। वर्तमान में हास्यास्पद समझे जाने के डर से नश्वर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं। वे फैशन, गर्व और समझदारी के गुलाम हैं। कभी-कभी हम सीखेंगे कि आत्मा, महान वास्तुकार, ने विज्ञान में पुरुषों और महिलाओं को कैसे बनाया है।

6. 192: 4-10 (से 2nd.), 19-21, 32-14 (से 2nd.)

हम वैज्ञानिक हैं, केवल तभी जब हम उस पर अपनी निर्भरता छोड़ देते हैं जो असत्य है और सत्य को समझ लेते हैं। हम तब तक वैज्ञानिक नहीं हैं जब तक हम सब कुछ मसीह पर छोड़ नहीं देते। मानवीय विचार आध्यात्मिक नहीं हैं। वे कान की सुनवाई से, सिद्धांत के बजाय भौतिकता से, और अमर के बजाय नश्वर से आते हैं। आत्मा ईश्वर से अलग नहीं है। आत्मा ईश्वर है।

विज्ञान में, आपके पास भगवान के विपरीत कोई शक्ति नहीं हो सकती है, और शारीरिक इंद्रियों को अपनी झूठी गवाही देनी चाहिए।

मुझे लिन में मिस्टर क्लार्क से मिलने के लिए बुलाया गया था, जो छह महीने तक कूल्हे की बीमारी के साथ अपने बिस्तर तक ही सीमित थे, जो कि एक लकड़ी के बड़े स्पाइक पर गिरने से हुआ था, जब वह एक लड़का था। घर में प्रवेश करने पर मैं उनके चिकित्सक से मिला, जिन्होंने कहा कि मरीज मर रहा था। चिकित्सक ने कूल्हे पर अल्सर की जांच की थी, और कहा कि हड्डी कई इंच तक फैली हुई थी। उन्होंने मुझे जांच भी दिखाई, जिसमें हड्डी की इस स्थिति के प्रमाण थे। तब डॉक्टर बाहर गए। मिस्टर क्लार्क अपनी आँखों के साथ स्थिर और दृष्टिहीन थे। मौत का ओस उसके माथे पर था। मैं उसके बिस्तर के पास चला गया। कुछ ही पलों में उसका चेहरा बदल गया; इसकी मृत्यु-पालक ने एक प्राकृतिक रंग को जगह दी। पलकें धीरे से बंद हो गईं और साँस लेना स्वाभाविक हो गया; वह सो रहा था। लगभग दस मिनट में उसने आँखें खोलीं और कहा: "मैं एक नए आदमी की तरह महसूस कर रहा हूँ। मेरी पीड़ा पूरी तरह से दूर हो गई है।"

7. 194 : 2-5

इस संक्षिप्त अनुभव की समीक्षा करते हुए, मैं दिव्य मन के साथ मनुष्य के आध्यात्मिक विचार के संयोग को समझने में असफल नहीं हो सकता।

8. 561 : 16-21

यूहन्ना ने मानव और दैवीय संयोग को देखा, जो यीशु में दिखाया गया है, जीवन और उसके प्रदर्शन में मानवता को गले लगाने वाली दिव्यता के रूप में, - मानव धारणा को कम करना और उस जीवन को समझना जो ईश्वर है। दिव्य रहस्योद्घाटन में, भौतिक और शारीरिक स्वार्थ गायब हो जाते हैं, और आध्यात्मिक विचार समझ में आता है।

9. 573 : 13-2

इस वैज्ञानिक चेतना के साथ एक और रहस्योद्घाटन किया गया था, यहां तक कि स्वर्ग से घोषणा, सर्वोच्च सद्भाव, कि भगवान, सद्भाव का दिव्य सिद्धांत, कभी पुरुषों के साथ है, और वे उनके लोग हैं। इस प्रकार मनुष्य अब एक दुखी पापी के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वर के धन्य बच्चे के रूप में माना जाता था। क्यों कर? क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी के सेंट जॉन के प्रति शत्रुता गायब हो गई थी, और इस झूठे अर्थ के स्थान पर आध्यात्मिक भावना थी, व्यक्तिपरक स्थिति जिसके द्वारा वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को देख सकता था, जिसमें आध्यात्मिक विचार और वास्तविकता की चेतना शामिल है। यह निष्कर्ष निकालने के लिए शास्त्र सम्मत अधिकार है कि इस अस्तित्व की वर्तमान स्थिति में पुरुषों के लिए यह संभव है, और - यह कि हम यहाँ, और अब, मृत्यु, दुःख और पीड़ा के निवारण के लिए सचेत हो सकते हैं। यह वास्तव में पूर्ण क्रिश्चियन साइंस का पूर्वज है। दिल थाम लो, प्रिय पीड़ित, इस वास्तविकता के लिए निश्चित रूप से कुछ समय में और किसी तरह दिखाई देगा। अधिक दर्द नहीं होगा, और सभी आँसू मिटा दिए जाएंगे। जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यीशु के शब्दों को याद रखें, "का राज्य तुम्हारे बीच में है॥" यह आध्यात्मिक चेतना इसलिए एक वर्तमान संभावना है।

10. 208 : 20-24

आइए हम वास्तविक और शाश्वत के बारे में जानें, और आत्मा के राज्य, स्वर्ग के राज्य की तैयारी करें - सार्वभौमिक सद्भाव का शासन और शासन, जिसे खोया नहीं जा सकता और न ही हमेशा के लिए अनदेखा किया जा सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6